

संविधान में आगे संशोधन करने वाले विधेयक को पेश करने की अनुमति दी जाये।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

श्री शिव चन्द्र झा : मैं विधेयक को पेश करता हूँ।

CONSTITUTION (AMENDMENT) *BILL

(Amendment of Article 233)

श्री शिव चन्द्र झा (मधुबनी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि भारत के संविधान में आगे संशोधन करने वाले विधेयक को पेश करने की अनुमति दी जाये।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

श्री शिव चन्द्र झा : मैं विधेयक को पेश करता हूँ।

16.07 hrs.

FOREIGN AID (MAINTENANCE OF ACCOUNT) BILL—Contd.

By Shri Kanwar Lal Gupta

MR. DEPUTY-SPEAKER : We shall now take up further consideration of the

Foreign Aid (Maintenance of the Account) Bill moved by Shri Kanwar Lal Gupta. Two hours were allotted and 1½ hours had been taken. Only thirty minutes remain and we can accommodate one or two Members. Then the Minister will speak and the Mover will reply. We have to complete all this within thirty minutes.

SHRI YASHPAL SINGH (Dehradun) : What about my amendment?

MR. DEPUTY-SPEAKER : You were not here when the time came.

SHRI YASHPAL SINGH : Kindly permit me to move it now.

MR. DEPUTY SPEAKER : No not now.

श्री शिव चन्द्र झा (मधुबनी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस फारेन एड विधेयक की मुसलफत करता हूँ। यह बात ज़रूर है कि बाहर से पैसा लेकर कुछ व्यक्ति या कुछ संस्थाएँ देश की राजनैतिक और आर्थिक बनावट में खराबियाँ ला रहीं हैं, लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि यदि देश की तरक्की और विकास के लिए कोई मदद मिलती है, और उसके साथ कोई स्ट्रिज़ एटेचड नहीं है, तो वह मदद नहीं लेनी चाहिए। दुनिया का इतिहास बताता है कि बाहर की मदद से देश के अन्दर के अन्वोलन या तहरीक या देश के विकास को आगे बढ़ने का मौका मिलता रहा है।

16.08 hrs.

[SHRI K.N. TIWARI in the Chair]

आप जानते हैं कि आजादी मिलने से पहले हमारे कई लोग देशकी आजादी के लिए हिन्दुस्तान से बाहर रहकर लड़ते थे और कई तरह की मदद लिया करते थे। उस ज़माने में हम दूसरों से जो मदद लेते थे, क्या वह मदद खराब होती थी? हिन्दुस्तान पर इंग्लैंड का राज्य था, लेकिन सन्धन की छाती पर बैठ कर कई संथाएँ और हमारे कई देशमक्त देश की आजादी के लिये अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ